अमर पंकज

धर्म के अमृत कलश में ज़ह्र जो भरता रहा,
कालनेमी की तरह वह छल ही छल करता रहा।

पीठ पीछे वार करने की तेरी फ़ितरत रही,
इसलिए तू सामने आने से भी डरता रहा।

धर्म ही है ख़ून मेरी धमनियों का, मैं व्रती,
लीन रहकर साधना में धर्म-हित मरता रहा।

मैं दधिचि हूँ प्राण का उत्सर्ग मेरा धर्म है,
अस्थि का भी दान दे मैं लोक-दुःख हरता रहा।

दैत्य ने सौ बार की है भंग मेरी साधना,
मैं मगर हर साधना निर्भीक हो करता रहा।

वेद पंचम है 'अमर' इतिहास जो मैं लिख रहा,
हर अधर्मी इसलिए इतिहास से डरता रहा।

सत्यम भारती

मन ने क्या-क्या कहा है,सुनो तो सही,
आज सपने दृगों में बुनो तो सही ।

हर तरफ ज्ञान बिखरा है,उसको पढ़ो,
जो पढ़ा है उसे फिर गुनो तो सही ।

फूल चुनने को, सारा जहां चुन रहा,
राह के कांटे भी कुछ चुनो तो सही ।

हर तरफ़ है अंधेरा, है कुहरा घना,
सूर्य बनकर इन्हें तुम धुनो तो सही ।

सिर्फ़ अपनी कहानी सुनाओ नहीं,
कौन क्या कह रहा है,सुनो तो सही ।

ISSN:2583-8849